"तबले के नामकरण में विभिन्न मतों का विमर्श"

डॉ० नरेन्द्र देव पाठक

सहायक आचार्य (तबला),
टी०डी० पी०जी० कालेज,
जौनपुर, (उ०प्र०)

तबले के नामकरण के बारे में निश्चित, सर्वमान्य तथा सर्वोच्चित तथ्य सामने नहीं आए हैं। अभी तक जितने मत आए है। सब में कुछ न कुछ कमियाँ अवश्य गिनायी जा सकती है तबला वाद्य का नाम तबला पड़ने के बारे में विद्वानों के निम्न गत हैं। उतर भारत में साधारणतः ऐसा जनप्रवाद है कि मध्य युग में मृदंग अर्थात् पखावज को बीच से काट कर दो हिस्सो में उर्ध्वमुखी स्थिति में रख कर बजाने से तबला वाद्य की उत्पत्ति हुई है। इस तरह पखावज के दो भाग करने पर भी उन्हें ऊ यमुखी रूप से बजाया जाना सम्भव हुआ। अर्थात् पखावज दो भागों में बँट कर भी नये वाद्य के रूप में बोला। अतएव तब भी बोला शब्दों का अपभ्रंश होकर तब (भी) +बोला= तयबोला तब्बोला.. तब्बोला, तबला शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। इस परिकल्पना के अनुसार यह हिन्दी भाषा की देहज शब्द सिद्ध होता है।

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि तबला वाद्य की वादन प्रक्रिया के विकास में मध्ययुग के अनेक पखावज वादकों का बहुत योगदान रहा है तबला वाद्य के अविष्कारक के रूप में समझे जाने वाले सुधार खाँ ढाढ़ी को भी लोग मूलतः पखावजी ही मानते है। इसके अतिरिक्त तबले के पंजाब बाज की शाखा का प्रारंभ भी लगभग अठारहवीं शताब्दी में भवानी दास पखावजी के शिष्य फकीर मुहम्मद द्वारा माना जाता है। इसीलिए भवानी दास पखावजी के प्रशिष्य तथा उन्नीसवीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध पखावज वादक कुदऊसिंह ने अवध के तत्कालीन शासक वाजिद अली शाह के लखनऊ दरबार में आबिद अली ढाढ़ी तबलीए के संदर्भ में तबला वादको को पखावज चादको का "गुलाम व शिख्याकार (शिष्य) कहा जाता था। तबला वादन प्रक्रिया के विकाश में पखावज वादको का विशेष योगदान होने पर भी पखावज को भागों में विभक्त करके तबला वाद्योत्तपत्ति और तबबोला से तबला' शब्द की व्युत्तपत्ति का तर्कसंगत वैज्ञानिक समाधान नहीं होता। क्योंकि बनावट की दृष्टि से पखावज को दो भागों में काट लेने पर उसका प्रत्येक भाग विदेशी अनवद्ध वाद्य बांगों के दोनों भागो की भाँति नीचे से खुला होना चाहिए, जबकि वस्तुतः तबला वाद्य के दोनों भागों के नीचे पेंदे पूर्णतयाः बन्द होते हैं। फिर मध्ययुग में तबला वाद्य के पूर्ण रूप तब्बोला' या "तबोला नाम के किसी अनवद्ध वाद्य का किसी भी संदर्भ में कहीं

कोई उल्लेख नहीं मिलता है। बलकि उनके साथ तब्ल या तबल शब्दों का उल्लेख मध्यकालीन संस्कृत, फारसी, हिन्दी, असमिया और उर्दू साहित्य में अवश्य मिलता है। अतएव इन आधारों पर पखावज को दो भागों में काटकर तबले की उत्पत्ति और तब (भी) बोला शब्दों से 'तबला' शब्द की व्युत्पत्ति एक काल्पनिक किवदंती मात्र सिद्ध होती है। उल्लेखनीय है कि आज के सुप्रसिद्ध तबला वादक पं० किशन महाराज भी पखावज को काटकर दो भाग करने से तबला वाद्योत्पत्ति की धारणा को असंगति मानते हैं। मध्य एशिया में दजला और फरात नदियों के मैदानी भाग में स्थित मेसोपोटेमिया (वर्तमान ईराक) की प्राचीन सुमेरियन, बेबिलोर्नियन, असीरीयन इत्यादि सभ्यताओं के साहित्य में 'बलग' और अक्कादियन साहित्य में उसके पर्याय 'बलग्गू' नाम के एक महत्वपूर्ण अनवद्ध वाद्य का उल्लेख मिलता है, जो कि लगभग दो हजार वर्ष पूर्व के प्राचीन युग में 'इया' अथवा 'इन–की' नामक देवता के मन्दिरों में विशेष अवसर पर बजाया जाता था।

'बलग' या बलग्गू शब्दो का पहला अंश बल क्रिया पद है, जिसका अर्थ प्रार करना या पीटना होता है। अतः बहुत सम्भव है कि प्रहार से या पीट कर बजाए जाने के कारण, उस अनवद्ध वाद्य का नाम 'बलग' या बलग्गू पड़ा होगा। संस्कृत भाषा में बल का अर्थ शक्ति होता है, जो कि प्रहार या पीटने की क्रिया के अनिवार्य होता है। अतः इस दृष्टि से बलग या 'बलग्गू' शब्द का क्रियापद संस्कृत के 'बल' से तुलनीय है। 'बनग' शब्द के अन्य अर्थ हर्ष, आनंदपूर्ण कोलाहल, ध्वनि, चिल्लाना, गुर्राना या गर्जना है।

इससे श्री अरविन्द मुलगाँवकर ने अपने ग्रंथ तबला में उच्चार एवं अर्थ साम्य के आधार पर बलग' शब्द के प्रथम और तबल' शब्द के अंतिम अंश 'बल' क्रियापद अथवा 'बलाग' शब्द के प्रथम और तबला शब्द के अंतिम अंश कला क्रियापद को शब्द विकास की मूल कड़ी मानते हुए 'बल' से 'तबल' या 'बला से तबला शब्द के व्युत्पत्ति की संभावना अभिव्यक्त कि है। श्री मुलगाँवकर की यह परिकल्पना ध्वनि के उच्चारण व अर्थसाम्य पर आधारित होने पर भी, उसमें भाषा वैश्रानिक दृष्टि से 'बल' या बला क्रियापद के पूर्व 'त' उपसर्ग के योग व अर्थ विकास का कोई निश्चित और प्रमाणिक आधार नहीं मिलता। अतः 'बल या बला' से 'तबल' या तबला शब्द की व्युत्पत्ति होने की संभावना संदेहास्पद प्रतीत मालूम होती है।

3. ईरान (फारस) में तब्ल बदली व तब्ल तुर्की, तब्ल जंग, तब्ल सामी, तब्ल मिगरी, तब्ल अल–मरकब तब्ल अलगाविग या तब्ल अल साविस और तब्लो अलम नामक अनेक अवनद्ध वाद्य प्रचलित हैं, जो कि उर्ध्वमुखी रूप में बजाए जाते हैं। अतएव अनेक विद्वान तबला शब्द की व्युत्पत्ति तब्ल शब्द से मानते हैं। वास्तव में तब्ल भी मूलतः फारसी भाषा का न होकर अरबी भाषा का शब्द है और यह शब्द अरबी भाषा से आकर फारसी भाषा में आकर प्रचलित हुआ।

एक किवदंती के अनुसार अरबी संगीत परंपरा के सुप्रसिद्ध व्यक्ति 'लमक के पुत्र 'टुबल' ने तब्ल वाद्य का अविष्कार किया। अतः उससे संबद्ध होने के कारण इस अनवद्ध वाद्य का नाम

'तब्ल' पड़ा। अरबी 'तब्ल के विषय में अरबी संगीत के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० हेनरी जान फार्मर का कथन है कि बैबीललोनियन–असीरीयन अनवद्ध वाद्य तब्ल की तुलना अरबी तब्ल से की जा सकती है। अतः इन शब्दों के पारस्परिक संबंध और उनसे अरबी 'तब्ल' शब्द के विकास की संभावना हो सकती है। (17:39, 2/3/2022)। उपज ठरच कोलम्बीया यूनिवर्सिटी के ओरियन्टल डिपार्टमेंट के अध्यक्ष डा० जेफे के मतानुसार "तब्ल' सा तबुल शब्द वस्तुत अरबी मूल का शब्द न होकर लैटिन टेबुल से लिया गया है। इस प्रकार अरबी भाषा के तब्ल या तबूल शब्द का विकास भी मूलत लैटिन शब्द "टेबुल" शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ चिकना चौरस व समतल होता है।

मध्य युग में मृदंग अर्थात् पखावज को बीच से काट कर दो हिस्सो में उर्ध्वमुखी स्थिति में रख कर बजाने से तबला वाद्य की उत्पत्ति हुई है। इस तरह पखावज के दो भाग करने पर भी उन्हें ऊ यमुखी रूप से बजाया जाना सम्भव हुआ। अर्थात् पखावज दो भागों में बँट कर भी नये वाद्य के रूप में बोला। अतएव तब भी बोला शब्दों का अपभ्रंश होकर तब (भी) +बोला= तयबोला तब्बोला.. तब्बोला, तबला शब्द की व्युत्पत्ति हुई।

इस विषय में एक तथ्य यह है कि अधिकतर यूरोपिय भाषाओं के विकास का संबंध लैटिन भाषा से रहा है। अतः अंग्रजी फ्रेंच, जर्मन इटैलियन तथा स्पैनिश इत्यादि भाषाओं में चौरस, चिकने, समतल या लकड़ी की चौरस, चिकनी, समतल मेज के अर्थ में इस्तेमाल होने वाले टेबल या उससे विभिन्न रूपों के मूल विकास का संबंध भी लैटिन भाषा के टेबुल शब्द से है इसीलिए यूरोपिय भाषाओं में टेबल या उससे 6 वनिसाम्य वाले समानार्थी शब्द प्रायः उर्ध्वमुखी समतल दस्तुओं के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं।

तुर्की फारसी इत्यादि भाषाओं में व्यवहृत होने वाला अरबी या तब्ल या तबल् शब्द ऊपरी सतह पर चौरस तथा समतल वस्तुओं के अर्थ में भी इस्तेमाल होता है, जैसे अरबी भाषा में तब्ल फलों को रखने की उस पाएदार मेज या ट्रे को भी कहते हैं, जिसके मध्य भाग की उपरी सतह बराबर व चौरस होती है। इसीलिए इन भाषाओं में तब्ल या उसके सहयोग से बने अनेक शब्दों में उर्ध्वमुखी, चौरस व समतल होने का भाव सन्निहित रहता है।

फारसी भाषा में तब्ल शब्द के अनेक अर्थों में एक अर्थ संदूकची या पिटारी भी होता है। इसीलिए फारसी भाषा में इत्र बेचने वाले अत्तार के उस संदूकची या डिब्बे को तब्ल ए अत्तार कहा जाता है, जिसका उपरी भाग चमड़े से ढ़का होता है और जो इत्र की शिशीयां रखने के काम आता है। संदूकची या पिटारी का ढ़ाचा अन्दर से खोखला होने के साथ उसके ढक्कन की उपरी सतह प्रायः चौरस होने के कारण की 'तब्ल' शब्द को इस अर्थ में प्रयोग किया जाता है। ध्यान पूर्वक विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि प्रायः उर्ध्वमुखी अवनद्ध वाद्यों की संरचना भी स्थूल रूप से एक ऐसी बन्द पिटारी या डिब्बे कि भांति होती है जिसका ढ़ांचा भीतर से खोखला होता है और उपर का ढक्कन एक तने हुए चर्म से चौरस व समतल रूप में मढ़ा रहता

है। संभवतः इसलिए अरब, फारस व तुर्किस्तान इत्यादि देशो में अनेक चर्माच्छादित, समतल व उर्ध्वमुखी अवनद्ध वाद्यों को प्रायः 'तब्ल' या 'तबुल' शब्द से संबोधित किया जाता है, जैसे तब्लजंग, तब्ल तुर्की, तब्ल सामी इत्यादि।

यह विशेष ध्यान देने योग्य तथ्य हैकि लैटिन में तबुत अरबी के तब्ल और संस्कृत में तल धातु से बने तल शब्दों के मूल में सतह के चौरस अर्थात् समतल होने का भाव सन्नीहित है। 'ताल' शब्द व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के तल धातु से हुई है। इसीलिए ताल शब्द के मूल अर्थ में संगीत को तल अर्थात् उपरी सतह या स्तर पर प्रतिष्ठित करने का भाव है और 'ताल' को संगीता की प्रतिष्ठा का आधार माना गया है। अतएव इस दृष्टि से चौरस, चिकने व समतल अर्थ वाले लैटिन शब्द 'टेबुल' अवनद्ध तालवाद्य के अर्थ वाले अरबी शब्द 'तब्ल' और ताल से संबद्ध संस्कृत शब्द 'तल इन तीनों के मूल अर्थ में अर्थसाम्य हैं इतना ही नहीं बल्कि किसी सीमा तक शब्द संरचना की दृष्टि से चर्मनद्ध तालवाद्य के अर्थ वाले अरबी शब्द तब्ल और ताल के मूल संस्कृत शब्द तब्ल और ताल के मूल संस्कृत शब्द 'तल' दोनो में पहले 'त' और अंत में 'ल वर्ण प्रयोग की अद्‌भुत समानता दिखाई पड़ती है।

अरबी वर्णमाला का हाए हव्वज' अर्थात छोटी 'हे' अक्षर, अरबी फारसी भाषाओं के अनके शब्दों के अन्त में जुड़कर संस्कृत भाषा के विसर्ग (:) के उच्चारण की तरह अर्घहकार की ध्वनि देता है, जैसे ज्यादह (अधिक), उम्दः= उन्दह् (उत्तम) इत्यादि। इसी तरह तबल' शब्द के अन्त में भी छोटी 'हे' जुड़कर तब्लः= तब्लह शब्द बन जाता है। प्रायः हाए हव्वज' शब्दांत में हाए मुस्तफी अर्थात अनुच्चरित 'हे' के रूप में सुयक्त रहता है, जैसे परवानः= परवानह शब्द में अन्तिम 'ह' का उच्चारण वस्तुतः 'अ' जैसा होकर पूरा शब्द परवानअ उच्चारित होता है। ठीक इसी प्रकार तब्लः= तब्लह् शब्द को भी तब्लअ उच्चारण किया जाता है।

अरबी भाषा के व्याकरण नियमानुसार 'तब्ल' संज्ञा पुल्लिग शब्द है और 'तब्ल' उसका स्त्रीलिंग रूप है। प्रकृति में साधारण एक ही प्राणिवर्ग में पुरुष जातीय जीवों का आकार, स्त्रीजातीय जीवों के आकार से बड़ा होता है। इसलिए अनेक भाषाओं में प्रायः बड़े आकार वाली किसी वस्तु के लिए संज्ञा पुल्लिग शब्द और छोटे आकार वाली उसी वस्तु के लिए उस संज्ञा पुल्लिग रूप व्यवहार किया जाता है, जैसे तम्बूरा– पु० (बड़ा तम्बूरा), तम्बूरी स्त्री (छोटा तम्बूरा), कटोरा–पु०, कटोरी स्त्री टोकरा– पु०, टोकरी– स्त्री इत्यादि। इसी प्रकार अरबी मूल के पुल्लिगवाची तब्ल' शब्द का अर्थ बड़े आकार वाला ऊर्ध्वमुखी अवनद्ध वाद्य और स्त्रीलिंगवाची 'तब्ल' शब्द का अर्थ छोटा आकार वाला ऊर्ध्वमुखी अवनद्ध होता है। अतएव अरबी व फारसी भाषाओं में अनवद्ध वाद्यों के लिए इन्ही अर्थों में तब्ल और तब्ला शब्द प्रचलित हैं। उर्दू भाषा में दोनों शब्दों का प्रयोग पुल्लिग के रूप में होता है।

कालांतर में फारसी तब्ल' शब्द का अपभ्रंश 'तबल' के रूप में विकसित होकर प्रचलित हो गया। इसीलिए मुसलमानों के भारत में आगमन के पश्चात् भारतीय भाषाओं के मध्यकालीन साहित्य में तबल शब्द का उल्लेख धीसा, नगाड़ा इत्यादि ऊर्ध्वमुखी अवनद्ध वाद्यों के अर्थ में मिलता है।

फारसी भाषा में हे अक्षर से अन्त होने वाले और विसर्ग की ध्यान देने वाले शब्दों का भारतीय उच्चारण के अनुसार लोक भाषाओं में अपभ्रंश होने पर उन शब्दों के अन्त में हे के स्थान पर दीर्घ आ का उच्चारण किया जाने लगा, जैसे उम्दह की जगह 'उम्दा और ज्यादह की जगह ज्यादा इत्यादि। इसी प्रकार तब्लः = तब्लह) झ 'तब्ला' शब्द बन गया। अतएव 'तब्ल' और 'तब्ल' = तब्लह शब्दों का भारतीय भाषाओं में निम्नलिखित रूप में विकास हुआ–

1) तब्ल झ तबल झ तबल।

2) तब्लः = तब्लह् झ तब्लअ् झ तब्ला झ तबला।

शब्द संरचना की दृष्टि से तब्ल शब्द मूलतः त. व और ल इन तीन वर्णों से मिल कर बना है। अरबी, फारसी व तुर्की भाषाओं की वर्णमाला में ता की अभिव्यक्ति के लिए ते और 'तोय ये दो वर्ण, ब के लिए वे और ल के लिए लाय वर्ण नियत हैं। अतः अरबी व फारसी लिपि में कुछ शब्दों के त को ते और कुछ में तोय' से लिखने की परम्परा है।

निष्कर्ष–

भारत के वाद्यों में आधे से भी अधिक वाद्यों का नामकरण या तो उसकी संरचना तथा उसमें प्रयुक्त पदार्थ के आधार पर एवं उसके पटाक्षर या बोलों के आधार पर हुआ है। बोलों या पटाक्षरों के आधार पर नामकरण किए हुए कुछ वाद्यों के नाम करटा, वीणा, डमरू, डिमडिमी, नगाड़ा, खंजरी, टुनटुना आदि हैं।

करटा–

संगीत रत्नाकर में सारंगदेव ने इसका उल्लेख किया है। संगीत समयसार संगीत मकरन्द आदि ग्रन्थों में इस वाद्य का उल्लेख मिलता है। इसके पटाक्षर सांरगदेव ने, करट निरिकि तिरिकिरि बताए है। चूंकी इसके बोलया पटाक्षर करट, तिरिक आदि है और इसका नाम भी करता है अतः इससे स्पष्ट हो जाता है कि इस वाद्य का नामकरण इसके बोल के आधार पर ही हुआ है।

वीणा–

वीणा अत्यन्त प्राचीन तत् वाद्य है और इसका विकसित रूप मोहनावीणा तथा सितार आज भी बजाया जाता है। वीणा बजाते समय ण वर्ण का एहसास स्पष्ट रूप से होता है। अतः इसको भी वाद्य के बोल के आधार पर नामोतरित किया हुआ माना जा सकता है।

डमरू–

डमरू हिन्दू धर्म में शंकर जी का वाद्य माना जाता है इसको बजाने पर डम डम का रौ स्थापित होता है। इसलिए इसका भी नामकरण इसके बोल के आधार पर हुआ है।

नगाड़ा–

उपर्युक्त वाद्यों के समान नगाड़ा का भी नामकरण उसके बोल या पटाक्षर के आधार पर जान पड़ता है क्योंकि नगाड़ा में नड़–नड़ की आवृत्ति बार–बार होती है।

खंजरी–

खंजरी को बजाने पर खन खन की ध्वनि उत्पन्न होती प्रतीत होती है इसके खन खन के आधार पर खंजरी नामावतरित होना उचित जान पड़ता है।

टुनटुना–

उपर्युक्त वाद्यों की तरह टुनटुना भी पटाक्षर के आधार पर नामावतरित हुआ है। क्योंकि इस को बजाने पर दुन–दुन की ध्वनि सुनाई पड़ती है।

उपर्युक्त सभी वाद्यों के नामकरण के बारे में समझने पर यह स्पष्ट हो जाता है, कि वाद्यों की ध्वनि के आधार पर बहुत से वाद्यों का नामावतरण हुआ है।

इन बातों से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि तबले का नामावतरण उसकी ध्वनि के आधार पर हो सकता है। अगर तबले के बोलों को देखा जाय तो उसमें त अक्षर की अधिकता है तथा एक बार दाएँ तबले पर उगली से प्रहार करने पर त की ध्वनि सुनाई देती है तथा तबले के दोनों भागों (दाया बाँया) के अलग–अलग नामः तबला दाएं तथा रा तथा उग्गा बाये का है। इसलिए दाँए की ध्वनि के आधार पर ही तबला नाम त अक्षर से अवतरित हुआ है। क्योंकि दौए तबले से त घवनि निकलने पर उसे त बोलने वाला बाद्य त् + बोला = तबोला कहने लगे जिसका सुधरा हुआ या विकसित नाम तबला है।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची</u> :–

1. ताल प्रकाश, पृ० 4.
2. तबला, पृ० 237
3. मादनुल मुसीकी, पृ० 242.
4. The History of Musical Instruments, p. 75.
5. तबला पृष्ठ 16 व 17.
6. History of Arabian Music, p-17.
7. The History of Musical Instruments, p-249.
8. The Shorter Oxford English Dictionary, p-2117.
9. Muhit Ul Muhit, Vol-II-p- 1367.
10. उर्दू हिन्दी शब्दकोश पृ0 278.
11. Comprehensive Person English Dictionary, p- 809.